

## \* संवेग \*

\* संवेग, व्यक्ति की उत्तेजित दशा है — तुलवर्ध

संवेग के प्रकार :- मैक्डगल ने निम्न प्रकार के संवेग दिए — (14 संवेग दिए)

* <u>मूल प्रवृत्ति</u>	<u>संवेग</u>
पलायन	भय
युगुत्सा	क्रोध
निवृत्ति	धृणा
संतान की कामना	लात्सल्य
शरणार्थी	करुणा
काम - प्रवृत्ति	कामुकता
पिडासा	आश्चर्य
दैन्य	आत्महीनता
आत्मगौरव	आत्माभिमान
स्वाभूटिकता	शुकाकीपन
भोजन की खोज	भूख
संग्रहण	अधिकार
हतस	आमोद
रचना	प्रतिमान

\* संवेगात्मक व्यवहार की अभिव्यक्ति होती है — जन्म से

\* संवेग से सम्बंधित सिद्धान्त :-

जेम्स हैंग का सिद्धान्त — विलियम जेम्स & कॉले हैंग  
 कैनेन - वार्ड का " — वाल्डर कैनेन & फिलिप वार्ड  
 स्केचर - सिंगर का " — स्टेनली स्केचर & जेरोम सिंगर

\* सबसे के संगानात्मक विकास का उत्तम स्थान -

विद्यालय एक सा वातावरण

\* शिक्षा का अधिकांश व्यवहार आधारित होगा - मूल प्रवृत्ति पर

\* संवेग है - उत्तेजना भावों में परिवर्तन

\* समस्या - समाधान के 6 सौपान दिए - स्किनर

(1) समस्या समझना

(2) जानकारी संग्रह करना

(3) सम्भावित समाधानों का निर्माण

(4) सम्भावित समाधानों का मूल्यांकन

(5) सम्भावित " " का परीक्षण

(6) निष्कर्ष का निर्णय

\* प्रोत्साहन सिद्धान्त - वॉल्स & काफमैन

\* प्रोत्साहन सिद्धान्त - वॉल्स & काफमैन



## \* समायोजन \*

\* पूरा करने वाली परिस्थितियों के बीच तालमेल स्थापित करना कहलाता — समायोजन

\* यदि तालमेल स्थापित न कर पाएँ तो, — असामान्य व्यवहार होने लगता।

- (1) तनाव : — परिस्थिति के अनुसार कार्य नहीं कर पाता तो पैसा होने लगता, तनाव।
- (2) दुश्चिन्ता : — अवि अचेतन मन की दमित इच्छा चेतन मन में आने का प्रयास करती।
- (3) दबाव : — सफलता व असफलता तथा आत्म-सम्मान की रक्षा के समय व्यक्ति महसूस करता।
- (4) भगनाशा/कुंठा — बार-बार प्रयत्न करने पर भी असफल हो जाना।
- (5) क्षण/संघर्ष — दो अवसर प्राप्त होने पर किसी एक को चुनना।

\* मानसिक मनोसंश्लेष दो प्रकार की होती :-

- (1) प्रत्यक्ष उपाय
- (2) अप्रत्यक्ष उपाय

\* दमन : — सर्वप्रथम फ्राइड ने प्रयोग किया।  
↳ क्रोध, दुःख, अनुभूतियों को भुलाना।

\* प्रत्येक : — अपनी असफलता का दोष दूसरे पर लगाना।

\* रौबितकरण : — कोई कारणवश वस्तु का प्राप्त न होना, तो उसमें दोष निकालकर स्वयं को संतुष्ट

\* सतिगमन :— पूर्व-स्थिति में वापिस लौट आना

\* तादात्मिककरण :— कोई व्यक्ति पद। प्रतिष्ठा वाला होता है, उससे गुणों का अनुकरण करने लगना।

\* स्वप्न अचेतन मन का स्वरूप है — फ्राइड

\* स्वप्न चेतन मन " " — एडलर

\* स्वप्न चेतन & अचेतन " " — युंग



## \* व्यक्तित्व \*

\* व्यक्तित्व उन मनोवैज्ञानिक व्यवस्थाओं का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ समायोजन कर लेता है — आलपोर्ट

व्यक्तित्व वर्गीकरण :-

क्रैचमर के अनुसार :- शारीरिक संरचना के आधार पर पहला वर्गीकरण

- (1) स्थूलकाय (पिकनिक) — नोटि व्यक्ति
- (2) सुष्ठुलकाय (एथलेटिक) — खिलाड़ी
- (3) क्षीणकाय (एस्थेनिक) — दुर्बल शरीर
- (4) मिश्रित काय (डिप्लास्टिक) — मिते-पुले

शैल्डन के अनुसार : (A) शारीरिक रचना के —

- (1) एन्डोमोर्फिक — शारीरिक संतुलित, फुलीला
- (2) मिसोमोर्फिक — मजबूत
- (3) एक्टीमोर्फिक — शक्तिहीन

(B) स्वभाव के आधार पर :- शैल्डन

- (1) बिसेरोटॉनिक — मस्त मौला
- (2) सोमैटोटॉनिक — कर्मि, शक्तिशाली
- (3) सेरिब्रोटॉनिक — हीरान, परेशान

हिप्पोक्रेटस के अनुसार :- हृत्प व स्वभाव आधार पर

- (1) कफ प्रवृत्ति वाले — सुस्त, निडरिया
- (2) कालि प्रवृत्ति " — निराशावादी
- (3) पित्त " " — शारी. व संवेगात्मक रूप से स्थिर
- (4) अग्नि रुचिर " — संवेगात्मक रूप से सशक्त परन्तु कमजोर

समाजशास्त्री के आधार पर :- स्प्रेंजर

- (1) सैद्धान्तिक
- (2) आर्थिक
- (3) राजनीतिक
- (4) धार्मिक
- (5) सामाजिक
- (6) सौन्दर्य

Tick - आशा राधा से सुन्दर है।

मनोवैज्ञानिक आधार पर :- युंग/जुंग

- (1) अन्तर्मुखी - लैबल
- (2) बहिर्मुखी - नेता
- (3) उभयमुखी - दोनों गुण पाया जाना

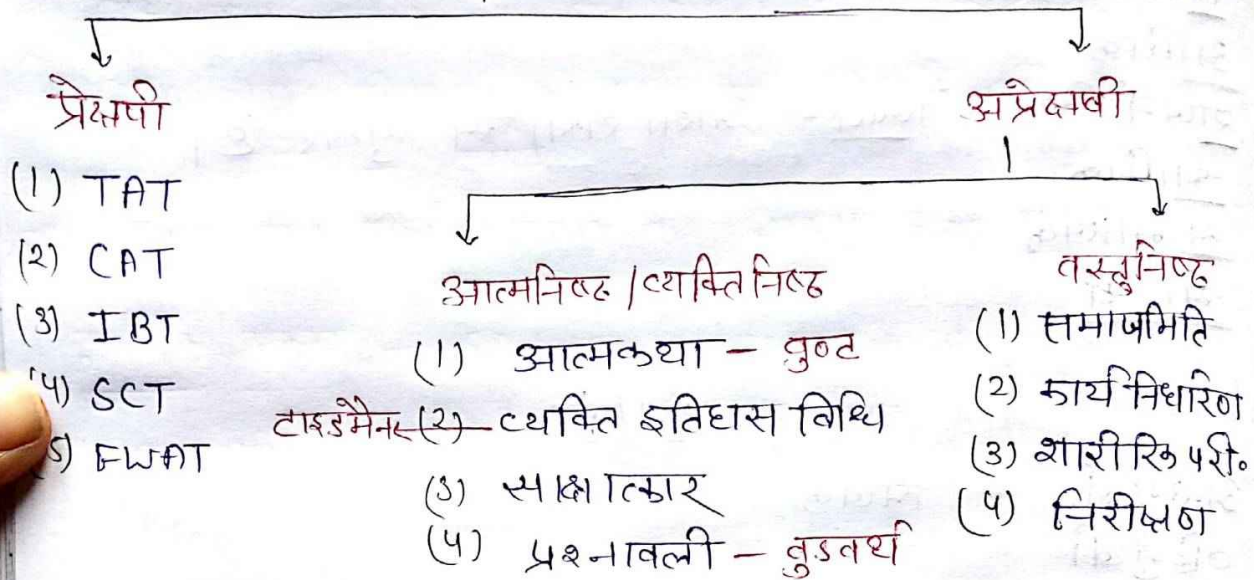
भारतीय दृष्टि कोण से :-

- (1) सत्त्वगुणी - ईश्वर व शर्म विश्वास
- (2) रजोगुणी - कर्म-मे
- (3) तमोगुणी - सुख हासि

\* ग्रंथियों के आधार पर - कैपन



# \* व्यक्तित्व मापन विधियाँ \*



TAT — Thematic Apperception test  
(प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण)

- कार्ड — 31
- प्रतिपादक — मैरे & मार्गन (1935)
- उम्र — 14 वर्ष से ऊपर

CAT → Children Apperception test (बाल सम परीक्षण)

- कार्ड — 10
- प्रतिपादक — न्योपोल्ड बेलोउ (1948)
- उम्र — 3-11 वर्ष

IBT → Ink blot test (रोगी स्थायी चिह्न)

- प्रतिपादक — हरमन रोगी
- कार्ड — 10
- बाल 5 पूरे कलिंग 5 विभिन्न रंग वाले

SCT — Sentence Completion test (वाक्य पूर्ति परी.)

- प्रतिपादक — वासन & टैलर
- EX — मैं आज ? खुश हूँ।

FWAT — Free word Apperception test

↳ फ्रांसिस गाल्टन ने दिया

- \* निरीक्षण विधि — वाटसन
- \* समाजमिति विधि — J.L. मोरेनो
- \* कर्म निश्चयन /  
रेटिंग स्केल — थर्स्टन



\* बुद्धि \*

\* बुद्धि कार्य करने की एक विधि है - ~~पुस्तकें~~ बुद्धि

\* बुद्धि अमूर्त विचारों के बारे में सोचने की योग्यता है - हमने

\* बुद्धि ज्ञान अर्जन करने की क्षमता है - बुद्धि

बुद्धि के प्रकार :- थार्नडाइक & गैरैट के अनुसार :-

- (1) मूर्त बुद्धि - <sup>गामक</sup> यांत्रिक / व्यावहारिक बुद्धि कहते।
- (2) अमूर्त " - सैद्धान्तिक बुद्धि (पुस्तकीय ज्ञान)
- (3) सामाजिक " - सामाजिक / व्यवहारगत दोनों से।

बुद्धि के सिद्धान्त :-

(1) रुढ़तत्व सिद्धान्त :- 1911 में बिने ने।

↳ विशिष्ट बुद्धि पर  
↳ निरकुंशवादी सिद्धान्त कहते।

(2) द्विकारक सिद्धान्त :- स्पीयरमैन

↳ G (सामान्य) , S (विशिष्ट)

(3) प्रतिपक्षि सिद्धान्त :- थॉमसन

↳ व्यापक / वर्गघटक भी कहते  
↳ विरोधी द्विकारक (स्पीयरमैन) का

(4) फ्लूइड & क्रिस्टलाइज्ड :- कैटल

↳ तरल  
↳ ठोस  
↳ अभिन्न  
↳ अनुभवां से प्राप्त  
↳ प्रतिकारक / विशेषक सिद्धान्त

\* जन्मजात अमूर्त

\* किसी सूचना को सीखना - तरल  
\* सूचना को शब्द में व्यक्त करना - ठोस

(5) बहुकारक सिद्धान्त : — थार्नडाइक

4 स्तर हैं —

- स्तर
- परास
- क्षेत्र
- गति

परमाणुवादी, बालू का टीला, विशिष्ट  
योगाओं का सिद्धान्त

(6) समूहकारक सिद्धान्त : — थर्स्टन

- आंकिक
- शाब्दिक
- ताकिक
- वाचिक
- स्मृति
- वस्तु-प्रक्षेपण
- शब्द-प्रवाह योग्यता

(7) पदानुक्रमिक सिद्धान्त — P.E. बर्नन

(8) बहुबुद्धि सिद्धान्त : — हॉवर्ड गार्डनर (3 प्रकार की बताई)

- (1) भाषाई बुद्धि → कवि, प्रवक्ता, लेखक
- (2) ताकिक बुद्धि → दार्शनिक, वैज्ञानिक
- (3) स्थानिक " → मूर्तिकार, इंजीनियर
- (4) संगीतक " → संगीतकार
- (5) शारीरिक गतिक " → नर्तक, धावक, शिल्पकार, खिलाड़ी
- (6) अन्तःवैयक्तिक " → योगी, संत
- (7) प्राकृतिक " → किसान
- (8) अस्तित्ववादी " → दार्शनिक चिन्तन
- (9) व्यक्तिपरक बुद्धि (अन्तःपारस्परिक बुद्धि) → डॉक्टर, नेता,

(9) त्रिपान्चीय सिद्धान्त : — स्तर्नबर्ग (3 प्रकार की बुद्धि)

→ सूचना संसाधन सिद्धान्त कहते।

- (1) विश्लेषणात्मक
- (2) सृजनात्मक
- (3) व्यावहारिक



## \* त्रि-आयामी सिद्धान्त \*

प्रतिपादन - गिल्फोर्ड

अन्य नाम : - बुद्धि का संरचना सिद्धान्त

बुद्धि की तीन विमाएँ हैं -

1. संक्रिया
2. विषयवस्तु
3. उत्पाद

1. संक्रिया : - संक्रिया, जिसकी मदद से हम किसी विषय वस्तु को "चिंतन व मनन" करते हैं।

संक्रिया में 5 मानसिक क्रियाएँ -

- (a) संज्ञान - पहचान, स्वीकृति संबंधी
- (b) स्मृति - अजित ज्ञान स्थापना करना
- (c) अपसारी चिंतन - विभिन्न दशाओं में सोचना।
- (d) अभिसारी चिंतन - विभिन्न दशाओं से सौचते हुए एक बिंदु पर आना।
- (e) मूल्यांकन - चिंतन मनन की जाने वाले वस्तु के प्रति निर्णय।



२. विषयवस्तु - संक्रिया करने के लिए जिन सूचना सामग्री का प्रयोग किया जाता है, उसे विषयवस्तु कहते हैं।

विषयवस्तु को 5 भागों में बांटा -

(a) आकृति - दृश्यात्मक - देखकर अनुभव करना (रंग, रूप, आकार)

(b) आकृति - श्रवणात्मक - सुनकर जानकारी प्राप्त करना (स्वनि, प्रवृत्ति)

(c) संकेतात्मक - संख्या, अक्षर, प्रतीक

(d) भाषागत - शब्दों अर्थ व विचार

(e) व्यवहारगत - दूसरों के साथ संबंध को समझने की लक्ष्यता

3. उत्पाद :- संक्रिया के द्वारा विषयवस्तु को लेकर जो बौद्धिक क्रियाएँ प्रक्रिया की जाती हैं, उसके परिणामस्वरूप उत्पाद प्राप्त होता है।

उत्पाद 6 प्रकार के प्राप्त होते हैं -

(a) इकाईयाँ (Units) - एक पं., शब्दार्थ, आकृति प्राप्त होना

(b) वर्ग (Class) - वर्गीकरण (पुरुष + स्त्री = जनसमूह)

(c) संबंध (Relation) - संप्रत्ययों को जोड़ने वाला

(d) प्रणाली (System) - एक संरचना का निर्माण/संगठित रूप

(e) रूपान्तरण (Transformation) - एक रूप का दूसरे रूप में परिवर्तित होना

(f) अनुपयोग (Implication) - विषयवस्तु के आधार पर निष्कर्ष निकालना।



\* 1977 में गिल्फोर्ड की कोषों की सं० = 150  
 \* 1980 " " " " = 186

अन्य सिद्धान्त :-

बुद्धि 'क' स्तर — हैव

हार्मिक सिद्धान्त — मैक्डगल

बुद्धि इकाई " — स्टेन/जॉनसन

\* भाषा विकास सिद्धान्त — चॉमस्की

\* शीलगुण / विशेषक " — ऑलपोर्ट

\* उपलब्धि अभिप्रेरणा " — मैकलिमेण्ड

\* प्रतिस्थापन सिद्धान्त — शुधरी

\* स्वार्थवाद / आत्म सम्प्रत्यय प्रवर्तक — जेम्स

\* अधिगम सौपनकी सिद्धान्त — रॉबर्ट गेने

↳ अधिगम के 8 प्रकार बताए ।

